OFFICE, PRINCIPAL GOVERNMENT TULSI COLLEGE, ANUPPUR
Affiliated to Awadhesh Pratap Singh University Rewa (MP)
Registered Under Section 2 (F) & 12 (B) of UGC Act

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in ☎9893076404

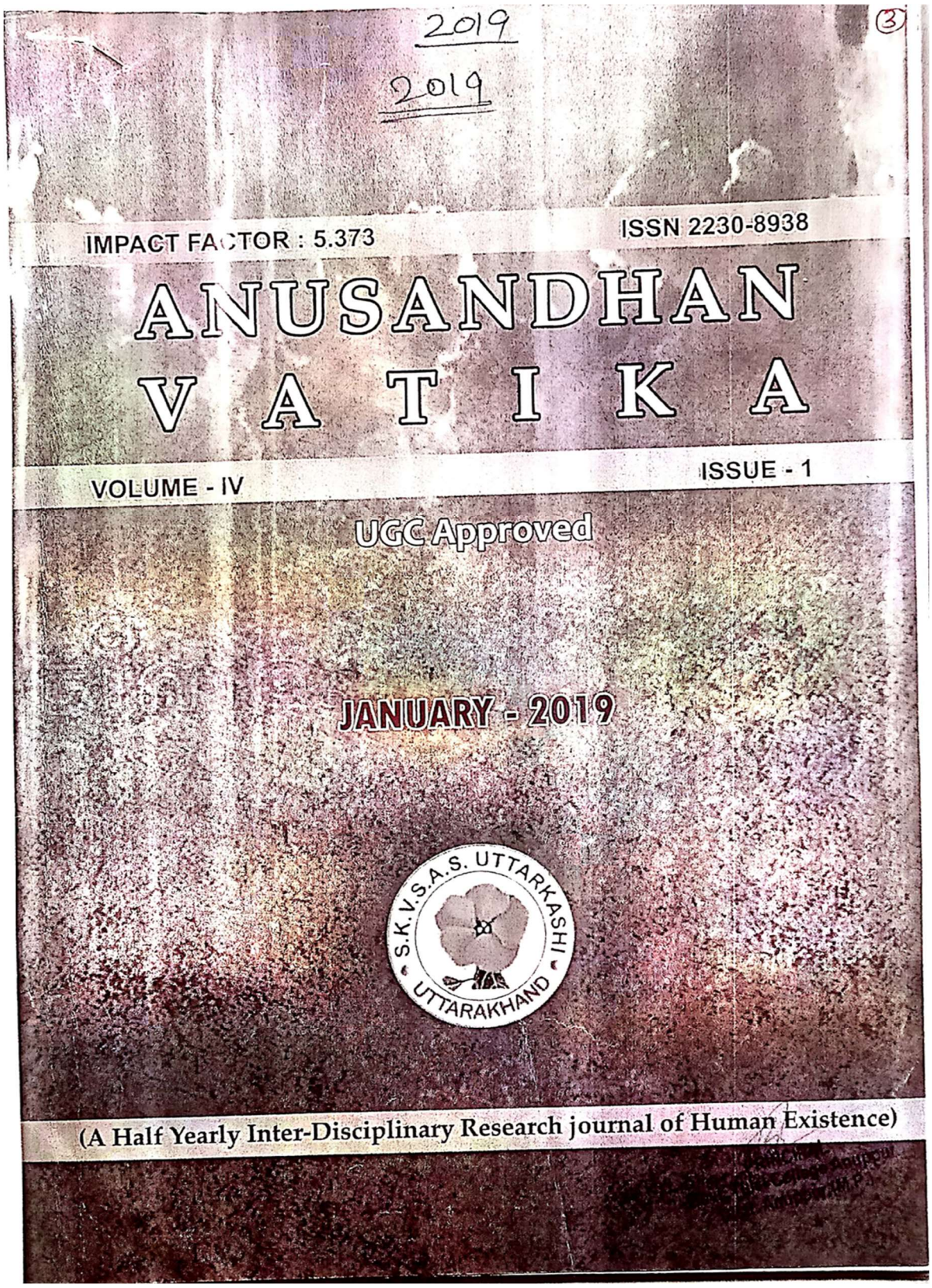

OFFICE, PRINCIPAL GOVERNMENT TULSI COLLEGE, ANUPPUR
Affiliated to Awadhesh Pratap Singh University Rewa (MP)
Registered Under Section 2 (F) & 12 (B) of UGC Act

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

Impact of family planning program among women of tribal area 2019

Anusandhan Vatika

ISSN: 2229-8938

जनजातीय क्षेत्र की महिलाओं में परिवार नियोजन कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन (अनूपपुर जनपद पंचायत के विशेष संदर्भ में)

तरन्नुम सरवत
शोधार्थी (समाजशास्त्र)

सारांश: समाज सामाजिक सम्बन्धो का जाल है, एव मनुष्य का सामाजिक प्राणी है, अत व्यक्ति अपने जीवनयापन के लिए परिवार का दायरा चुना है। आज विश्व की अनेक समस्याओ मे से एक ज्वलन्त समस्या विस्फोटक जनसख्या वृद्धि की है। जनसख्या की दृष्टि से विश्व मे भारत का दूसरे स्थान है, जबकि क्षेत्रफल वृद्धि को नियत्रित करने के लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम की अनिवार्यता प्रमुख साबित होती जा रही है।

सरकार का मुख्य उद्देश्य परिवार नियोजन कार्यक्रम है जिससे जनसख्या वृद्धि को कम करना है। भारत सरकार ने अपनी पचवर्षीय योजनाओ मे भी परिवार कल्याण को विशेष महत्व दिया है। अत जनजातीय क्षेत्र के लिए सर्वेक्षण किया गया। साधन की अपर्याप्त एव समयाभाव के कारण यह सर्वेक्षण जनजातीय क्षेत्र मे परिवार नियोजन कार्यक्रम का प्रभाव सीमित रखा गया। अत परिवार नियोजन से सम्बन्धी जागरूकता, ज्ञान और आर्थिक स्तर से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की गई।

प्रस्तावना:

विश्व के लगभग 30 देश जनसख्या के विकास को कम करने के लिये सतत प्रयत्न कर रहे है। इन राष्ट्रो के प्रयास मे निजी एव अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाये सहायता कर रही है अत सभी राष्ट्रो का जनसंख्या वृद्धि को रोकने का एक ही विचार है "परिवार नियोजन"।

भारत के लिये परिवार नियोजन की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए प. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था "यदि जनसंख्या मे इस गति से वृद्धि होती रही तो पचवर्षीय योजनाओ का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा"।

भारत के भूतपूर्व केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री राजनारायण ने इस कार्यक्रम के पुराने नाम परिवार नियोजन का बदलकर "परिवार कल्याण" कर दिया। व्यक्ति एवं समाज दोनो के लिए परिवार कल्याण बहुत महत्वपूर्ण है, सरकार ने परिवार नियोजन कार्यक्रम को विशेष महत्व दिया है।

परिवार नियोजन कार्यक्रम की आवश्यकता

भारत जैसे अर्ध विकसित देशो मे परिवार नियोजन कार्यक्रम की आवश्यकता को समय की सबसे प्रमुख आवश्यकता कहा जाता है। क्योंकि भारत की जनसंख्या तेजी से बढ रही है भारत मे प्रतिवर्ष 200 लाख व्यक्ति जन्म लेते है। जिनमे 80 लाख की तो मृत्यु हो जाती है। जनसख्या की दृष्टि से तो भारत का दुनिया मे चीन के बाद दूसरा स्थान है। यहाँ विश्व की 15 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। भारत का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का 2.2 प्रतिशत है। भारत की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 1,210,193,422 थी। जिसमें 623,724,248 पुरूष तथा 586,469,174 महिलाये थी। जनसंख्या मे होने वाली वृद्धि दर 24.75 प्रतिशत रही है।

भारत व योजना आयोग ने स्वयं कहा है–"भारत जैसी स्थित वाले देश मे जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि की दर का आर्थिक विकास एवं प्रति व्यक्ति जीवन स्तर पर निश्चय ही विपरीत प्रभाव पड़ता है।"

जनजातीय क्षेत्र की महिलाओं का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण–

जनजातीय क्षेत्र की महिलाएँ कम पढी लिखी होती है अर्थात उन्हे शिक्षा के संबध मे कम ही जानकारी होती है परन्तु शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओ के माध्यम से अब से शिक्षा स्वंय तो नही परन्तु अपने पुत्र पुत्रियो को पढाना चाहते है, जिससे कि वे भविष्य मे अपने पैरो पर खडे हो सके अर्थात जनजातीय क्षेत्र की महिलाएँ ज्ञान प्राप्त करना चाहती है।

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)

Jaithari Road Anuppur, District- Anuppur, Madhya Pradesh, Pin Code:- 484224 www.gtcanuppur.ac.in

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in 9893076404

Anusandhan Vatika
ISSN: 2230:8938

सुझाव

परिवार कल्याण के रास्ते में सबसे गंभीर समस्या यह है कि किसी व्यक्ति जोड़ अथवा समूह को परिवार कल्याण कार्यक्रम अपनाने के लिये कैसे उत्साहित किया जाय, इस सम्बन्ध में जो सुझाव दिये जाते है वह इस प्रकार है :–

1. पति–पत्नी को यह अनुमति अवश्य कराई जाये कि आज की आर्थिक स्थिति में बड़ परिवार अरैर रहन–सहन के स्तर में सुधार ये दोनो नाते एक साथ सम्भव नहीं हो सकती।
2. एक बार परिवार कल्याण (नियोजन) की सुविधाओं की आवश्यकता की अनुभूति करा दी जाय तो लोग उपलब्ध होने पर सुविधाओं का लाभ उठाना स्वीकार कर लेगें।
3. सेवाओं और आवश्यक सामान को लोगों की ड्योढ़ी (घर) तक पहुँचाना पड़ेगा।
4. लोगो की सांस्कृतिक, धार्मिक या नैतिक मान्यताओं को ठेस पहुँचाये बिना उसे परिचित और विश्वास प्राप्त नेताओं द्वारा ऐसे साधनों के माध्यन से बात पहुँचाई जाये, जिनसे वे परिचित हो और उसमे उनकी निष्ठा हो।
5. उपलब्ध साधनो और अपनी सन्तानों के प्रति दायित्व को समझते हुये केवल माता–पिता ही तय रकें कि उन्हें कितने बच्चे पैदा करने चाहिये।
6. परिवार नियोजन कार्यक्रम के लिये समग्र वातावरण में समग्र मानव को ही लक्ष्य बताया जाना चाहिये। यह कार्य स्वास्थ्य चिकित्सा और समाज कल्याण सेवाओ के द्वारा समन्वित रूप में होना चाहिये।
7. दृष्टिकोण मूल्य और आचरण में कारगर परिवर्तन तभी सम्भव है जब लोगों को यह विश्वास हो जाये की ऐसा परिवर्तन उन्ही के हित मे है उनके सामाजिक नेताओं द्वारा स्वीकृत अनुमोदित ह तथा वह समाज द्वारा आम तौर पर स्वीकृत है।

परिवार कल्याण (नियोजन) की शिक्षा का लाभ विशेष कर तरूण, महिला, पुरूष ही उठा सकते है इसलिये विवाह के पूर्व एवं पश्चात् परिवार नियोजन शिक्षा कार्यक्रम को परिवारों में तीव्र करना चाहिये यदि यह शिक्षा उनकी भाषा, नोति रीति धार्मिक परम्पराओं रीति–रिवाजों, फैशनों के माध्यम से घर–घर दी जाये तो निःसंदेह जनजातीय परिवारों में परिवार नियोजन अधिक लोकप्रिय हो सकता है।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि की समस्या से ग्रस्त देशों में अनेक उपायों को एक साथ अपनाकर परिवार कल्याण (नियोजन) को शीघ्रातिशीघ्र लोकप्रिय बनाया चाहिये। निर्धन देशों को अपनी समस्याओं को हल करने के लिये आर्थिक विकास के साथ–साथ परिवार कल्याण कार्यक्रम को शीघ्र प्रभावशाली ढग से अपनाना चाहिये। तभी वे अपने राष्ट्र को समृद्ध और सुखद भविष्य की कामना कर सकें। इसके साथ ही साथ जनजातीय क्षेत्र की महिलाओं में भी शिक्षा का स्तर को बताकर उन्हें परिवार नियोजन के बारे मे जानकारी प्रदान की जाए जिससे वे इसे अपनाने के लिए सहज हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. बघेल, किरण, जनांकिकी एवं भारत में जनस्वास्थ्य पुष्पराज प्रकाशन 1978
2. डॉ. शर्मा, श्रीनाथ, जनजातीय समाजशास्त्र, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2010
3. डॉ. सक्सेना, आर.एन., भारतीय समाज तथा सामाजिक संस्थाएँ
4. डॉ. बघेल, डी.यस., भारतीय समाज, पुष्पराज प्रकाशन 1986–87
5. मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ, सामाजिक सर्वेक्षण व शोध
6. नवानियॉ, एम.एल. एवं जैन, शशि, सामाजशास्त्रीय अनुसंधन कांतक और विधियां रिसर्च पब्लिकेशन नई दिल्ली, जयपुर
7. महात्मागांधी, हरिजन, 1973
8. तोमर, राम बिहारी, गौतम, द्वारिका प्रसाद, परिवार और समाज, श्री राम मेहरा एण्ड कम्पनी आगरा, 1973
9. मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ, भारतीय समाज व संस्कृति विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली 1981
10. सिह एवं मल्होत्रा, समकालीन भारतीय समाज और संस्कृति प्रकाशन भारतीय विद्याभवन वाराणसी
11. महिला स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं का मैनुअल, स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार – 1978

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Distt. Anuppur (M.P.)